सेमेस्टर - IV , तृतीय प्रश्न पत्र
Sem - IV , Paper - III

Institutional food administration

आहारीय संस्थान प्रबन्धन

Dr. Neeti Singh
H.N.B.G.P.G. College
Naini

आहार सेवा संस्थायें : वह संस्थायें जो ग्राहकों को उनकी आवश्यकता अनुसार स्वच्छ एवं सुरूचिपूर्ण भोजन उपलब्ध करायें। जहाँ भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से आये, भिन्न धर्म, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति के ग्राहकों को आहार पकाया एवं परोसा जाता है।

आहार सेवा संस्थायें इस कार्य हेतु भोजन की नियोजन (planning) करती है एवं भोजन को तैयार कर (prepare) परोसती (serve) है। यह छोटे ढाबे से लेकर बड़े रेस्त्रां तक होते है।

कार्य — भोजन का नियोजन (planning of food)
- भोजन को तैयार करना (preparation of food)
- भोजन को परोसना (serving of food)

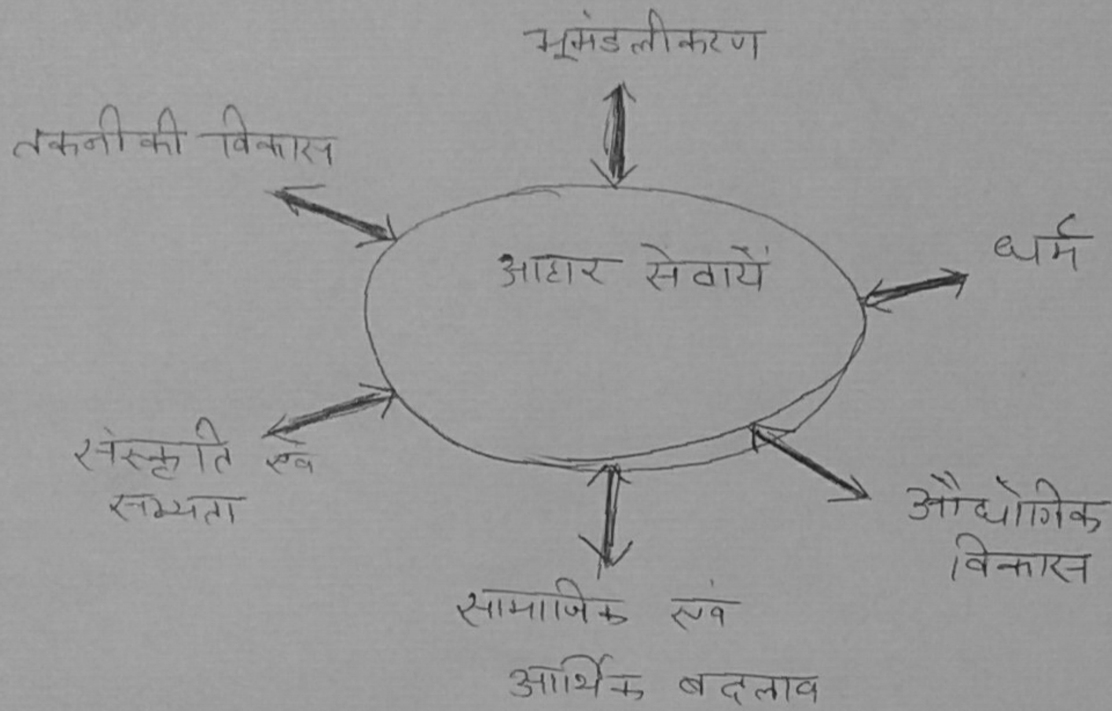
जब भी आहार संस्थान की चर्चा होती है तब निम्न प्रकार चिन्हित होते है - होटल, रेस्त्रां, Fast food joints, कैफेटेरिया, विपणन मशीनें (vending machines) आदि। अतः स्पष्ट है की यह संस्थान विभिन्न प्रकार एवं क्षमता के होते हैं, एवं ग्राहकों व बाजार की आवश्यकता अनुरूप कार्य करते हैं। यह एक व्यक्ति या परिवार द्वारा संचालित या बड़े होटल श्रृंखला द्वारा संचालित हो सकते हैं, किन्तु अंततः सबका उद्देश्य ग्राहकों को आवश्यकता अनुरूप भोजन उपलब्ध कराना है। यह रोजगार भी उपलब्ध कराता है। घर पर भोजन डिलिवरी, छोटे पैमाने पर भोजन पकाना - टिफिन सेवा - ऑफिस या घर हेतु। कार्यरत स्त्री पुरुषों, तैयारी हेतु रहने वाले छात्र/छात्रायें जहाँ भोजन पकाने की सुविधायें एवं समय सीमित है यह संस्थान अति आवश्यक है।

आहार सेवाओं का इतिहास :

- भारत में सुदूर क्षेत्रों से श्रद्धालु विभिन्न धार्मिक स्थलों की यात्रा करते थे।
- श्रद्धालुओं हेतु बड़ी संख्या में भोजन तैयार करने एवं परोसने की व्यवस्था थी।
- सुदूर क्षेत्रों से आये श्रद्धालुओं को भोजन परोसने हेतु आहार संस्थान स्थापित हुए।
- यह श्रद्धालुओं को भोजन परोसने के साथ ही अल्प समय विश्राम एवं ठहरने की व्यवस्था भी करने लगे।
- भारत में धर्मशालायें यह कार्य करती हैं।
- धार्मिक स्थलों के निकट स्थापित धर्मशालाऐं, धार्मिक कारणों से शुद्ध, सुस्वादु शाकाहारी भोजन उपलब्ध कराती हैं, एवं भोजन साफ एवं स्वच्छ वातावरण में परोसती हैं।
- यह धार्मिक संस्थायें जैसे मंदिर, धर्मशालायें एवं लंगर आदि एक समय में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं हेतु भोजन ~~परोसने~~ पकाने एवं परोसने में सक्षम हैं।
- यहाँ परोसा गया भोजन सरल, जल्दी खराब न होने वाला एवं स्वच्छ होता है।
- भूमंडलीकरण के प्रभाव से कई वैश्विक उद्योग एवं भोजन संस्थायें भारत आयी हैं एवं ~~यह~~ भारत की कई संस्थायें विदेशों में ~~अपने~~ ~~भोजन~~ भारतीय भोजन उपलब्ध करा रही हैं।
- आहार सेवा संस्थानों में रोजगार की असंख्य संभावनायें उत्पन्न हुई एवं राष्ट्र में रोजगार का एक प्रमुख स्रोत है।

वर्तमान में

आहार सेवाओं को प्रभावित करने वाले कारक



आहार सेवाओं की आवश्यकता एवं महत्त्व :

- मनुष्य को जीवित रहने हेतु भोजन की आवश्यकता है। भोजन एक अनिवार्य आवश्यकता है।
- किसी भी आयु, जाति, आय या स्तर के व्यक्ति २४ घंटो में अवश्य भोजन की आवश्यकता होती है
- सुगमता से उपलब्ध, आवश्यकता अनुरूप भोजन की मांग स्वाभाविक है
- औद्योगिक संस्थानो / स्कूल / कालेजो / ऑफिस आदि के कर्मियो, छात्र, छात्राओ हेतु सुगम, स्वच्छ एवं सामर्थ्य अनुरूप भोजन की आवश्यकता होती है। जिस कारण यहाँ कैन्टीन, कैफे, बुफे आदि का प्रबंध होता है
- आजकल जहाँ पति एवं पत्नी दोनो कामकाजी है जैसे छोटे बडे महानगर इत्यादि वहाँ इन संस्थानो की मांग बढ़ी है
- पर्यटन स्थलों पर आहार संस्थाओं का विशेष महत्त्व है, जहाँ यह भारतीय संस्कृति एवं भोजन पर्यटको को अवगत कराती है वही यह विदेशी मुद्रा अर्जन का भी महत्त्वपूर्ण स्त्रोत है।
- T.V, Internet आदि के माध्यम से लोगो में विभिन्न भोजन शैलियो, पाक कलाओ के प्रति जागरूकता बढ़ी है फलस्वरूप खाद्य संस्थान अलग-2 शैलियों के भोजन बना एवं परोस रही है। इस व्यवसाय से जुडे लोगो में भिन्न-2 संस्कृतियो की भोजन शैलियो की जानकारी आवश्यक हो गई है। सुदूर देशो के भोजन के प्रति लोगो के बढ़ते रूझान ने अलग-2 शैलियो के रेस्त्रां स्थापित हुए हैं।
- भारत में ही अलग-अलग प्रदेशो मे कई प्रकार के व्यंजन एवं भोजन शैलियाँ प्रचलित हैं जहाँ उत्तर मे कश्मीर, दक्षिण में तमिलनाडु, केरल, पूर्वोत्तर राज्य जैसे उडीसा, प.बंगाल पश्चिम मे गुजरात एवं महाराष्ट्र आदि क्षेत्रों की स्वयं की विकसित पाक शैली है। यह भारतीय भोजन में विविधता का उत्तम स्त्रोत है।

आहार सेवा संस्थानों के प्रकार : Types of food Service institutions

आहार सेवा संस्थान

व्यवसायिक आहार सेवा संस्थान
Commercial food service institutions

- छोटे बड़े रेस्त्रां, ढाबा, कैफे
- महंगे होटल, स्पा आदि
- गेस्ट हाउस, हॉलिडे होम
- Ice cream parlour, pizzaria, काफी शॉप
- सिनेमा, मॉल आदि मे भोजन सेवा
- ट्रेन एवं हवाई जहाज में भोजन सेवा
- सेमिनार, वर्कशॉप, पार्टी केटरिंग
- मोबाइल केटरिंग, गृह भोजन सेवा टिफिन सेवा

अव्यवसायिक आहार सेवा संस्थान
Non-commercial food service institutions welfare

- स्कूलों में माध्याह्न पोषण कार्यक्रम, सरकार द्वारा चालित पोषण कार्यक्रम
- स्कूली भोजन व्यवस्था
- कर्मिकों हेतु सब्सिडी युक्त भोजन व्यवस्था - फैक्ट्रियों आदि मे
- हास्पिटल मे मरीजों हेतु भोजन, विधवा आश्रम
- अनाथालय
- धर्मशाला
- लंगर, प्रसाद आदि
- पूरक पोषण कार्यक्रम

I व्यवसायिक आहार सेवा संस्थान –

- वह संस्थान जो व्यवसाय हेतु अर्थात 'लाभ' कमाने के उद्देश्य से आहार सेवा प्रदान करते हैं, व्यवसायिक आहार सेवा संस्थान कहलाते हैं।
- यहाँ मूल्य देकर भोजन प्राप्त किया जाता है
- इनके छोटे बड़े कई प्रकार हैं – जैसे छोटी चाय की गुमटी से लेकर रेस्त्रां, होटल, कैफेटेरिया आदि)
- महत्तव : यह आहार सेवा संस्थान देश में बड़ी संख्या में <u>रोजगार</u> उपलब्ध कराती हैं।
- यह संस्थान पर्यटन स्थलों पर सुविधायें प्रदान कर <u>पर्यटन उद्योग</u> को बढ़ावा देते हैं।
- यह देश में <u>विदेशी मुद्रा</u> लाने का बड़ा साधन है।
- यह भोजन रूपी <u>अनिवार्य आवश्यकता</u> हेतु कार्य करती हैं।
- विभिन्न संस्थानो में कर्मिको की स्वास्थ्य रक्षा, सौहार्दपूर्ण वातावरण एवं प्रदान करती है
- <u>भूमंडलीकरण</u> के साथ अब यह आहार सेवा के साथ ही नये अनुभव प्रदान करती हैं जैसे विभिन्न देशो के पाक शैली से अवगत कराती हैं एवं सुदूर देशो के व्यंजन के नये अनुभव प्रदान करती हैं,
- <u>केटरिंग</u> सेवा इसी श्रेणी के अन्तर्गत आती है। केटरिंग किसी अवसर के आयोजन (शादी, वर्षगाँठ, जन्मदिन आदि) हेतु निर्धारित संख्या के अतिथियो के लिये ग्राहक के अनुसार मेन्यू बनाया एवं सर्व किया जाता है।

यह किसी होटल, गार्डन, घर, फार्महाऊस आदि स्थलों पर अवसर अनुरूप आयोजित की जा सकती हैं।

व्यवसायिक आहार सेवा संस्थान - --

व्यवसायिक आहार सेवा संस्थानों में 25% से अधिक लाभ कमाया जाता है
इस सीमा से कम लाभ कमाने वाली संस्थायें व्यवसायिक श्रेणी में नहीं आती।

<u>अव्यवसायिक आहार सेवा संस्थान :</u>

वे संस्थान जो समाज कल्याण हेतु कार्य करती हैं एवं सामाजिक लक्ष्यों की पूर्ति हेतु आहार सेवा या अन्य सेवाओं के साथ आहार सेवा प्रदान करती है अव्यवसायिक आहार सेवा संस्थान कहलाती है।

इनका प्रमुख उद्देश्य लाभ कमाना नहीं है। इनके लक्ष्य सामाजिक उत्थान से संबंधित होते हैं। उदा: सरकारी अस्पताल, स्कूल, जेल, अनाथालय, विद्याश्रम आदि में दी जाने वाली आहार सेवायें।

- यह संस्थान अनुदान द्वारा, या ग्राहकों से निश्चित मूल्य पर या ग्राहक जो मूल्य दे सकते हैं प्राप्त कर सेवायें प्रदान करता है।
  उदा: सरकारी स्कूल में दिया जाने वाला माध्याह्न पोषण कार्यक्रम, सरकारी अस्पताल पूरक पोषण कार्यक्रम आदि में दिया जाने वाला भोजन। ऑफिस या उद्योग के कर्मियों हेतु सब्सिडाइज्ड या कम लागत पर भोजन उपलब्ध कराना।
- यह सेवायें केवल संस्थागत व्यक्तियों हेतु सीमित संख्या के लाभार्थियों तक सीमित होती है।
- यह समाजिक विकास में सहयोग करती हैं जैसे अस्पताल, स्कूल व वृद्धाश्रम आदि ~~स्कूलों~~ जहाँ स्कूली भोजन द्वारा स्कूलों में छात्र उपस्थिति प्रतिशत बढ़ता है। वहीं

अस्पतालों का सब्सिडी युक्त भोजन कम लागत में भोजन उपलब्ध कराता है जब इलाज के दौरान संसाधन सीमित होते हैं।

- ऑफिस में उपलब्ध भोजन कार्यक्षमता बढ़ाता है।
- सरकारी पोषण संस्थानों द्वारा माताओं एवं गर्भवती महिलाओं को भोजन उपलब्ध कराया जाता है।

अभ्यास प्रश्न -

Q1. आहार सेवा संस्थानों की उपयोगिता एवं महत्व लिखें।

Q2. आहार सेवा के प्रकार बतायें।

Q3. कैटरिंग क्या है ?

Q4. आहार सेवा को प्रभावित करने वाले कारकों की चर्चा करें।